शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह–अगस्त 2021

वर्ष–7 अंक–3

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा
राजीव गांधी शिक्षा मिशन, छत्तीसगढ़

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

एजेंडा एक: स्कूल खोलने की तैयारी

विगत दो वर्षों से कोरोना संक्रमण के कारण विद्यालय बंद हैं | इस सत्र में 16 जून से शासन के निर्देशानुसार शिक्षकों एवं बाकी स्टाफ के लिए विद्यालय खुले ताकि प्रवेश एवं रजिस्ट्रेशन एवं अन्य कार्य संपादित किया जा सके | दो अगस्त से शासन ने कक्षा दसवीं और बारहवीं को खोलने का निर्णय लिया है | कक्षा पहली से पाँचवीं, कक्षा आठवीं भी ग्राम पंचायत अथवा वार्ड पार्षद द्वारा उस क्षेत्र में कोरोना के केस नहीं होने पर खोले जाने की छूट दी जा रही है |

पिछले 15-16 माह से ऑनलाइन और ऑफलाइन मोहल्ला क्लास के माध्यम से बच्चों को शिक्षा से जुड़े रखने एवं सीखने की प्रक्रिया को सततृ जारी रखने सभी शिक्षकों के द्वारा ऑनलाइन क्लास और ऑफलाइन मोहल्ला क्लास जारी है | परन्तु एक्सर्पट्स की राय है कि बच्चों के बेहतर सर्वांगीण विकास के लिए स्कूल के वातावरण में पढ़ाई ज्यादा जरूरी है ताकि बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास हो सके | इसके साथ यह भी मानते हैं कि ऑनलाइन क्लास एक साधन मात्र है साध्य नहीं । विद्यालय बंद होने से बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति से लेकर पोषण तक पर इसका नकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है | ऐसे में जब पुनः स्कूल खोले जाने का फैसला लिया गया है तो एक टीचर एवं पालक होने के नाते विद्यार्थियों की सुरक्षा को लेकर मन में बहुत से शंकाएँ उत्पन्न हो रही हैं, और होना स्वाभाविक है? अतः स्कूल खुलते ही एक शिक्षक होने के नाते कोविड प्रोटोकॉल एवं एक्सर्पट्स की राय के तहत बच्चों के लिए सुरक्षित माहौल तैयार करना आवश्यक है।

स्कूल खोलने पर बच्चों की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाएँ-

1. स्कूलों में कोविड-19 के प्रोटोकॉल के अनुसार सभी को मास्क एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन अनिवार्य रूप से करना होगा। समय समय पर हाथ धोने साबुन रखा जाए |

2. प्रवेश द्वार में थर्मल स्क्रीनिंग एवं हैंड सेनीटाइजर की व्यवस्था की जानी चाहिए ।

3. सभी शालेय स्टाफ के साथ 18+ विद्यार्थियों को वैक्सीन लगाना सुनिश्चित किया जाए |

4.. विद्यार्थियों को स्कूल भेजना है या नहीं यह फैसला पालकों के हाथ में अतः सभी पालकों को विश्वास में लेकर बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए ।

5. शिक्षण कक्ष का नियमित रूप से सेनेटाइज कराया जाये। क्लासरूम में वेंटिलेटर अच्छा होना चाहिए ।

6. यदि संभव हो तो विद्यालय परिसर के खुले मैदान में कक्षाएँ संचालित की जानी चाहिए ।

7. विद्यालय के दर्ज संख्या के आधार पर 50-50% बच्चों को बुलाया जा सकता है ।

8. यदि विद्यार्थियों की संख्या अधिक हो दो अलग-अलग बैच बनाकर अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था की प्लानिंग की जाए ।

9. स्कूल खुलते ही बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था करनी होगी | इस हेतु सभी आवश्यक सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाएँ, रसोइयों का प्रशिक्षण एवं वितरण हेतु नियम बनाएँ | बच्चों को भोजन के लिए बैठते समय दूरी का पालन करने एवं हाथ धोने वाली जगह में भीड़ करने से मना करें | हाथ धोने के लिए अधिक नलों की व्यवस्था करें | साबुन रखें |

10. बच्चों की बैठक व्यवस्था एक बेंच में एक ही बच्चे के बैठने की व्यवस्था की जाए।

11. विद्यार्थी पीने के पानी की बोतल एवं लंच एक दूसरे से शेयर ना करें।

12. बच्चे समूह में ना रहे तथा अनावश्यक भीड़ न लगाएँ तथा अनावश्यक भीड़ में ना जाए ।

13. विद्यालय की किसी भी सामग्री को बेवजह हाथ ना लगाएँ यह सुनिश्चित किया जाए।

14. शिक्षण कक्ष का मॉनिटरिंग के साथ विद्यार्थियों को कोविड-19 के प्रोटोकॉल के प्रति सजग व जागरूक किया जाए।

15. पालकों को भी कोरोना से संबंधित आवश्यक जानकारियाँ देवें एवं बच्चों को थोड़ी भी सर्दी-खाँसी या बुखार होने पर बिलकुल भी स्कूल भेजने से मना करवाएँ |

16. स्कूल में एक साथ प्रार्थना सभा का आयोजन नहीं किया जाए | सुबह की सभा कक्षा शिक्षक बच्चों के साथ अपने अपने कक्षा के भीतर या ऐसे सुरक्षित स्थल पर करें जहाँ दूरी का पालन किया जा सके | कोई भी त्यौहार/ उत्सव का आयोजन करने भीड़ नहीं की जाए |

17. जिन शालाओं में क्वारेंटाईन सेंटर बनाए गए हों, उन्हें अच्छे से साफ-सफाई करते हुए सेनिटाईज किया जाए | सभी शालाओं में प्रतिदिन साफ़-सफाई, स्वच्छता का पालन किया जाए | शौचालय आदि नियमित रूप से साफ़ रखे जाएँ |

18. बच्चों को अपने पास कम से कम दो मास्क रखने एवं घर पहुंचकर उसे अच्छे से धो कर सुखाने और मस्क को किसी अन्य के साथ बदलने की सख्त मनाही करें |

19. कक्षा के भीतर ऐसी कोई गतिविधि नहीं करवाई जाए जिसमें बच्चों को भीड़ में एक दूसरे के साथ निकट रहकर गतिविधियाँ करनी हो | ऐसे खेल का आयोजन भी नहीं करें जिसमें एक दूसरे के पास आने एवं संक्रमण का ख़तरा बना रहे |

20. घर से स्कूल आते एवं जाते समय एक दूसरे से दूरी बनाकर चलने एवं अलग अलग कक्षाओं के लिए थोड़े-थोड़े अंतराल से स्कूल लगने एवं छुट्टी का समय निर्धारित करें | बच्चों को अपने दोस्तों के साथ भीड़ में आने से सख्त मना करे और पालकों को भी समझाएँ |

एजेंडा दो: मोहल्ला कक्षाओं एवं स्कूलों में शत-प्रतिशत उपस्थिति

ऐसे बहुत से छात्र एवं छात्राएँ हैं जो कि मोहल्ला कक्षा में नहीं आ पा रहे हैं। निश्चित ही यह हम शिक्षकों के लिए एक चुनौती है। हमें इन चुनौतियों को स्वीकार कर इस दिशा में ही काम करना है। अब हमारे सामने प्रश्न है कि ये बच्चे कैसे आएँगे। सबसे पहले हमें जानना पड़ेगा कि बच्चे कहाँ है, क्या कारण है, कुछ समस्या तो नहीं या वे पढ़ाई के प्रति रुचि नहीं लेते। यह सभी कारण, समस्या हमें मैदान में ही जाकर पता चलेगा। हमें बच्चों व पालकों से लगातार संपर्क करना पड़ेगा। उनकी समस्या को अपने स्तर पर दूर करने का प्रयास करना पड़ेगा। बहुत से अभी धान रोपाई में जा रहे हैं उनको समझाकर,माता पिता से मिलकर समाधान पा सकते हैं। हमें बच्चों को किसी भी सूरत में शाला तक लाना है इसके लिए हमें बहुत मेहनत करनी होगी। बच्चों की उपस्थिति बढाने हेतु कुछ सुझाव इस प्रकार हैं -

1.सर्वप्रथम ऐसे बच्चों की सूची बनाएँ जो मोहल्ला क्लास में शामिल नहीं हो रहे है

2. कारणों का पता करें,कि वे किस वजह से मोहल्ला क्लास में शामिल नहीं हो रहे है

3. अगर दूरी और संख्या वजह है उन्हें उनके पास की मोहल्ला क्लास में शामिल करने का प्रयास करें

4.आवासीय संस्था अपने छात्र/छात्राओं हेतु उनके निवासरत ग्राम की मोहल्ला क्लास में उनके पढ़ाई की व्यवस्था कर सकते हैं

5. बच्चों के निवासरत ग्राम में मोहल्ला क्लास ना होने की स्थिति पर स्थानीय पढे लिखे युवक, एनजीओ, स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद ली जा सकती है

6. अगर माँ-बाप मोहल्ला क्लास में अपने बच्चों को भेजने हेतु बिल्कुल भी इच्छुक ना हो तो उन्हें फोन के माध्यम से माता उन्मुखीकरण कर विभाग द्वारा प्रदाय की गई वर्कबुक, व्हाट्सएप द्वारा होमवर्क दे कर उनकी पढ़ाई सुनिश्चित कर सकते हैं

7. बच्चों को दिए जाने वाले विभिन्न सुविधाओं को तत्काल देना सुनिश्चित करें जैसे निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, गणवेश, अभ्यास पुस्तिकाएँ और राशन आदि

8. युवा क्लब को ऐसे बच्चों को खोजकर जो शाला नहीं आ रहे हैं, उन्हें लाने की जिम्मेदारी देकर उनका आना सुनिश्चित करवाएँ

9. पालकों से समय समय पर मिलकर उन्हें बच्चों को नियमित स्कूल भेजने प्रोत्साहित करें

10. बच्चों को कक्षा अध्यापन के दौरान प्रेरित करें और उन्हें सीखी हुई बातों को घर पर पालकों के समक्ष प्रस्तुत करने को कहें, उन्हें सीखी गयी बातों जैसे गीत-कविताओं को घर पर भी गाने को कहें

एजेंडा तीन: तीज त्योहारों पर आधारित प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम

बच्चों में भारतीय संस्कृति के बीज बोने और हमारी विलुप्त होती संस्कारों को जगाने का विद्यालय एक सशक्त माध्यम है। विद्यालय में बच्चों को न केवल किताबी ज्ञान दिया जाए अपितु तीज त्योहारों से सम्बंधित प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा उनमे उत्साह व संस्कार भरा जा सकता है । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली , जनजातीय व स्वदेशी ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने विशेष जोर दिया गया है।

त्योहारों के पीछे छिपी कहानी - हर त्योहारों के पीछे कोई न कोई प्राचीन कहानी होती है जो हमे सकारात्मक संदेश देती है।इसलिए समय समय पर बच्चों को इन कहानियों व संदेशों के प्रति बताते रहें ।जिससे वे अपनी संस्कृति से जुड़ाव महसूस करेंगे और जान सकेंगे त्यौहार क्यों मनाए जाते हैं और इनके महत्व क्या हैं। इस बार आप रक्षाबंधन की जानकारी देवें |

प्रतियोगिताओं का हो आयोजन - विभिन्न त्योहारों के अवसर पर प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के आयोजन कराए जाने से बच्चों में आपसी प्रेम, भाईचारा और सहयोग की भावना का विकास होगा साथ आत्माभिव्यक्ति को भी मंच व अवसर प्रदान होगा । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर मटकी फोड़ प्रतियोगिता से टीम भावना तो वही दशहरे के अवसर पर रामायण मंचन द्वारा अभिनय और वाक कौशल का विकास किया जा सकता है। त्योहारों के अनुरूप अन्य प्रतियोगिताएँ जैसे मेहंदी, रंगोली, साजसज्जा इत्यादि कराए जा सकते हैं। इस बार राखी बनाने की प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं |

तीज त्योहारों पर आधारित प्रतियोगिताएँ - जैसा कि आप सभी जानते हैं सावन या अगस्त माह से ही हमारे त्योहारों की शुरुआत हो जाती है तो क्यों न बच्चों को उसका ज्ञान कराया जाए । हमारे स्कूल भी दो अगस्त से खुल रहे हैं |

लाभ - 1.बच्चे स्वयं अपनी संस्कृति और परम्पराओ को समझ सकेंगे और भविष्य में अपनी संस्कृति को जीवंत रखेंगे।

2. प्रतियोगिता के द्वारा उनके हस्तशिल्प कौशलों को बढ़ावा मिलेगा साथ बच्चों का भावनात्मक, क्रियात्मक एवं मानसिक विकास होगा |

3. हस्तशिल्प कौशलों के विकास के साथ ही उनमे आत्मविश्वास जागेगा और व्यावसायिक अवसर प्राप्त होंगे ।

4. त्यौहार मनाना सभी बच्चों को अच्छा लगता है इन तरीकों से बच्चों और समाज का जुड़ाव भी विद्यालय की बढ़ेगा।

5. तीज त्योहारों की शिक्षा से बच्चों में एक नई ऊर्जा का संचार होगा जो उनको भविष्य में कई प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए भी प्रेरित करेगा |

एजेंडा चार: किताबों का गाँव

हाल ही में पेरुमकुलम को " किताबों का गांव " घोषित किया गया है ,जो भारत में दूसरा और केरल का पहला गांव है । पेरुमकुलम के एक ' विलेज ऑफ बुक ' में परिवर्तन के हिस्से के रूप में इस लाइब्रेरी को हाल ही में 10 स्थानों पर 10 बुक कोडू (स्लोप्ड - छत , घर के आकार के ग्लास बुककेस) को रखा गया है। इस गांव की आबादी लगभग 4000 है, गांव के स्कूल के शिक्षकों के अनुसार - " प्रत्येक बुककेस में 30-50 किताबें हैं , ज्यादातर बच्चों का साहित्य है जिसे बच्चे उधार ले सकते हैं।" यह कुछ अन्य किताबों और अखबारों के लिए भी हैं । इसका फोकस प्राथमिक रूप से बच्चों पर रखा गया है ताकि पढ़ने की आदत जल्दी प्रोत्साहित और पोषित हो । दिलचस्प बात यह है कि जब उन्होंने पहला बुककेस स्थापित किया तो उसमे उन्हें संदेह था , ग्राम अधिकारियों को उम्मीद थी कि किताबें या तो अप्रयुक्त रहेंगी या शीशे की दीवार या पुस्तकों को कोई नुकसान पहुँचा सकता है , लेकिन वे इस खुशी से आश्चर्यचकित थे कि ऐसी कोई बात नही हुई । यह आज भी वैसी ही बरकरार है और किताबें लगातार पढ़ी जा रही हैं ।

यदि आप अपने गाँव में ऐसा कुछ समुदाय के साथ मिलकर कर रहे हैं तो उसे हमारे साथ अवश्य साझा करें | इस कार्य से आप बच्चों एवं बड़ों में पढने की रूचि का विकास कर सकते हैं | किसी खास अवसर पर आप बड़ों को बच्चों की मासिक बाल पत्रिका का सब्सक्रिप्शन लेने हेतु भी प्ररेरित कर सकते हैं जैसे किसी के जन्मदिन पर या किसी की याद में हम ऐसा कर सकते हैं |

एजेंडा पांच: वैक्सीनेशन अभियान

आप सभी ने राज्य से भेजे गए गूगल फॉर्म में इस बार बहुत बढिया रिस्पांस दिया | लगभग डेढ़ लाख लोगों ने अपने वेक्सीनेशन की जानकारी इस गूगल फॉर्म में भरी |

- राज्य में 35% शिक्षकों ने दोनों टीके लगवा लिए हैं |
- कुल 48% शिक्षक पहला टीका लगा चुके हैं |
- अभी भी 13 % शिक्षकों ने टीका नहीं लगवाया है |

सभी शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक स्कूल स्टाफ से आग्रह है कि वे जल्दी से जल्दी टीका लगवाकर अपने स्कूल को शत-प्रतिशत वेक्सीनेटेड स्कूल घोषित कर लेवें और बाहर पोस्टर लगवाएं |

एजेंडा छह: चर्चा पत्र का बेहतर उपयोग

राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा विगत सात वर्षों से नियमित रूप से प्रतिमाह एक तारीख को चर्चा पत्र तैयार कर सोशियल मीडिया एवं cgschool.in वेबसाईट में प्रिंट एवं ऑडियो पोडकास्ट प्रारूप में अपलोड किया जाता है | चर्चा पत्र को आप जिले में स्वयं अध्ययन करते हुए अपने जिले की शालाओं में उसका क्रियान्यवन करवाएँ | जिले में अकादमिक गुणवत्ता लाने की दृष्टि से प्रतिमाह प्रथम सप्ताह में ही चर्चा पत्र के दस एजेंडा के उपयोग एवं क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित कार्य अनिवार्यतः करवाएँ-

1. सभी शिक्षकों को वेबसाईट से चर्चा पत्र डाउनलोड कर अध्ययन करने हेतु निर्देशित एवं प्रेरित करें

2. संकुल समन्वयक स्वयं चर्चा पत्र पढ़कर एक टीम बनाकर उन्हें दसों एजेंडा आबंटित कर स्वयं एवं अपने टीम के माध्यम से एजेंडावार चर्चा करवाएँ

3. चर्चा के दौरान विभिन्न प्रस्तावित कार्यक्रमों को शालाओं में क्रियान्यवन के लिए स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार योजना एवं समयसीमा निर्धारित करें

4. जिले के टेलीग्राम समूह में चर्चा पत्र पर आधारित आनलाइन अथवा फेज टू फेज बैठक के फोटोग्राफ आदि साझा करें

5. एजेंडा के अनुसार शालाओं में किए गए कार्यों का विवरण एवं फोटो भी टेलीग्राम ग्रुप में साझा करें

6. जिले से लेकर संकुल तक के मानिटरिंग अधिकारी शालाओं की मानिटरिंग कर चर्चा पत्र के क्रियान्वयन की नियमित मानिटरिंग करेंगे

7. शाला संकुल प्राचार्य अपने संकुल की सभी शालाओं के सभी शिक्षकों द्वारा चर्चा पत्र का अध्ययन, मासिक बैठकों में सक्रिय सहभागिता एवं क्रियान्वयन सुनिश्चित करवाते हुए अकादमिक कसावट लाने हेतु दृढ़संकल्पित रहेंगे

8. शैक्षिक समन्वयक के स्तर पर किसी भी स्थिति में अकादमिक कार्यों के किसी प्रकार की ढिलाई नहीं की जाए | अपने अपने संकुल में राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा सुझाए गए विभिन्न अकादमिक कार्यों के क्रियान्वयन एवं बच्चों में कक्षा अनुरूप दक्षताओं के लागू करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है | नई व्यवस्था में उनके पास बहुत कम स्कूल एवं शिक्षक हैं | अतः उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपना पूरा ध्यान अपने संकुल में बच्चों की उपलब्धि में सतत सुधार के लिए ही लगाएँगे और अपने पद की उपयोगिता साबित करेंगे |

उपरोक्त सभी कार्यों के आयोजन के दौरान कोरोना से सुरक्षा से संबंधित सभी निर्देशों का कडाई से पालन किया जाए एवं सभी स्कूलों में चर्चा पत्र के एजेंडाओं की जानकारी रहे |

एजेंडा सात: बच्चों के लिए निपुण भारत के लक्ष्य

क्षेत्र	#	बालवाटिका या आयुवर्ग 5-6	कक्षा एक या आयुवर्ग 6-7	कक्षा दो या आयुवर्ग 7-8	कक्षा तीन या आयुवर्ग 8-9
मौखिक भाषा	1	दोस्तो एवं शिक्षकों से बातचीत करना	कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना	गीत/ कविताएँ सुनाना	कविताओं को व्यक्तिगत रूप से और समूह में आवाज का उतार-चढाव और आवाज बदल कर सुनाना
	2	समझ के साथ तुकांत कविताएँ गाना	कविताओं/ गीतों को एक्शन के साथ सुनाना	कहानियों/कविताओं/ प्रिंट आदि में होने वाले परिचित शब्दों को दोहराना	सवाल पूछने, अनुभव बताने, दूसरों को सुनने और जवाब देने के लिए बातचीत में हिस्सा लेना
पढ़ना	3	अक्षरों एवं संगत ध्वनियों को पहचानना	सक्रिय तरीके से जोर से कहानी कहने के सत्र के दौरान भाग लेना तथा कहानी सत्र के दौरान और बाद में सवालों के जवाब देना, कठुतलियों एवं अन्य सामग्रियों के साथ परिचित कहानी का अभिनय करना	किसी दिए गए शब्द के अक्षरों से नए शब्द बनाना	आयु उपयुक्त अज्ञात कहानियों/ 8-10 वाक्यों के अनुच्छेद को पढ़कर 4 में से कम से कम 3 प्रश्नों के उत्तर दे सकें
	4	कम से कम दो अक्षर वाले सरल शब्दों को पढ़ना	आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ में कम से कम 4-5 सरल शब्द सहित छोटे-छोटे वाक्य पढ़ना	आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ से उचित गति और स्पष्टता के साथ सरल शब्दों के 8-10 वाक्यों को पढ़ना (लगभग 45-60 शब्द प्रति मिनट सही ढंग से)	भाषा के आधार पर और आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ से सही उच्चारण के साथ लगभग 60 शब्द प्रति मिनट की इष्टतम गति के साथ पढ़ना
लेखन	5	पहचान वाले अक्षरों को	परिचित सन्दर्भों (कहानी/ कविता/पर्यावरण	खुद को व्यक्त करने के लिए छोटे/ सरल	विभिन्न उद्देश्यों के लिए लघु संदेश लिखना

		लिखने का प्रयास करना	प्रिंट आदि) में प्रयोग होने वाले शब्दों में मात्राओं के साथ परिचित होना	वाक्यों को सही ढंग से लिखना	
	6	अपने पहले नाम को पहचानना और लिखना	लेखन, ड्राइंग और/या चीजों को अर्थ देना और अपने कार्यपत्र, बधाई संदेश, चित्रों आदि पर अपना नाम लिखना और ऐसे चित्र बनाना जो पहचानने योग्य हों या अन्य लोगों से मेल खाते हों	नामकरण शब्द, क्रिया शब्द और विराम चिन्हों को पहचानना	व्याकरणिक रूप से सही वाक्यों का प्रयोग करके खुद छोटे पैराग्राफ और छोटी कहानियाँ लिखना
संख्यात्मक	7	वस्तुओं की गिनती और 10 तक संख्याओं को सहसंबंधित करना	20 तक के वस्तुओं की गिनती	999 तक संख्या पढ़ना और लिखना	9999 तक संख्या पढ़ना एवं लिखना
	8	10 तक एक अंकों को पहचानना और पढ़ना	99 तक की संख्या पढ़ना और लिखना	99 तक की संख्याओं को जोड़ना और घटाना, दैनिक जीवन स्थितियों में 99 तक की वस्तुओं का योग	999 तक की संख्याओं को जोड़ना और घटाना, दैनिक जीवन में 999 तक की वस्तुओं का योग
	9	वस्तुओं के सन्दर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक/ कम/बराबर जैसे शब्दों का उपयोग करना	दैनिक जीवन स्थितियों में 9 तक की संख्याओं का जोड़-घटाव का उपयोग करना	गुणा और जोड़ को समान वितरण/ बँटवारे के रूप में गुणा करना और 2,3 और 4 के गुणन तथ्यों (तालिकाओं) का निर्माण करना	2 से 10 की संख्या के गुणन तथ्यों (तालिकाओं) का निर्माण और उपयोग करना और विभाजन तथ्यों का उपयोग करना
	10	अपने चारों ओर के विभिन्न वस्तुओं के	गैर-मानक गैर-समान इकाइयों जैसे हाथ की	दूर, पास, अन्दर, बाहर, ऊपर, नीचे, बाएँ, दाएँ, आगे, पीछे	किसी तिथि और दिन की कैलेण्डर पर पहचान करना,

		सन्दर्भ में तुलनात्मक शब्दों का उपयोग करना जैसे लंबे, सबसे लंबे, सबसे छोटे, से अधिक, हल्के	अंगुली, पैर की लंबाई, उँगलियों आदि का उपयोग करके लंबाई का अनुमान लगाना और पुष्टि करना और गैर-मानक इकाइयों जैसे कप, चम्मच, मग आदि के उपयोग करने की धारिता निकालना	जैसे स्थानिक शब्दावली का उपयोग करना	घंटे और आधे घंटे में घड़ी पर समय पढ़ना

निपुण भारत कार्यक्रम में आप सभी के सहयोग एवं सक्रिय सहभागिता से इस बार हमें बहुत अच्छी स्थिति में आना है | बच्चों के प्रदर्शन को पूरे देश में नंबर एक में लाया जा सकता है यदि हम सब मिलकर ठोस योजना के साथ कार्य करें | आपसे अपेक्षा है कि-

1. उपरोक्तानुसार प्रत्येक लक्ष्य को ध्यान से देखकर समझकर उसका अच्छे से अध्ययन कर लेवें | प्रत्येक लक्ष्य को सभी बच्चों में प्राप्त करने हेतु गतिविधियाँ ढूंढें / सोचें
2. संकुल से लेकर जिले में प्रारंभिक भाषा एवं गणित के लिए प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन करें और उनके माध्यम से अपने अपने क्षेत्र में इस आयु वर्ग के सभी बच्चों में उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षकों/ आँगनबाडी कार्यकर्ताओं को समर्थन एवं गतिविधियाँ तैयार कर नियमित रूप से उपलब्ध करवाएं |
3. उदाहरण के लिए यदि समझ एवं हाव-भाव के साथ तुकांत कविता गाना है तो आपको कम से कम पाँच हिन्दी एवं प्रचलित स्थानीय भाषा में कविताएँ ढूंढकर सभी शालाओं को उपलब्ध करवाई जानी चाहिए | उसे कैसे गाना है इस हेतु अच्छे गायक शिक्षकों से उसके वीडियो बनाकर सभी ग्रुप में साझा कर सभी बच्चों को कम से कम पाँच गीतों को गाकर सुनाने की क्षमता हासिल करवाएं |
4. इसी प्रकार गणित में दिए गए विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आपको बहुत सारी गतिविधियाँ ढूंढनी होगी | गतिविधियाँ तय करते समय मल्टीपल इंटेलिजेंस का प्रयोग अवश्य करें -भाषिक/दैशिक/शारीरिक/संगीतात्मक/तार्किक/ अन्तःव्यक्ति ...

एजेंडा आठ: सामाजिक अंकेक्षण

1. आगामी तीन वर्षों के लिए शाला प्रबन्धन समिति के सहयोग से शाला विकास योजना
2. शाला में आपदा प्रबन्धन समिति का गठन कर आपदा प्रबन्धन योजना तैयार करना और बच्चों से समय समय पर मोक-ड्रिल का अभ्यास
3. शाला प्रबन्धन समिति की नियमित बैठक आयोजित होती है और उसमें बच्चों की गुणवत्ता सुधार पर फोकस होकर चर्चा की जाती है
4. कोरोना लाकडाउन के समय शाला के सभी शिक्षक किसी न किसी नवाचारी तरीके का इस्तेमाल कर बच्चों का सीखना जारी रखे हैं
5. समुदाय की ओर से भी बच्चों का सीखना जारी रखने के लिए सीखने के केंद्र, माताओं का उन्मुखीकरण एवं शिक्षा सारथी उपलब्ध करवाए गए हैं
6. बच्चों को सीखने के लिए गाँव/ वार्ड में प्रिंट-रिच वातावरण बनाया गया है और बच्चे एवं बड़े इनका सीखने के लिए उपयोग करते हैं
7. सभी बच्चों को अभ्यास पुस्तिकाएँ मिली है और उन पर कार्य कर बच्चे अपने शिक्षकों से उसकी जांच करवाते हुए फीडबैक लेकर सुधार करते हैं
8. शाला के शिक्षक एक दूसरे से सीखने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी एवं सोशियल मीडिया से जुड़कर सीखने-सिखाने में रूचि लेते हैं
9. मुस्कान पुस्तकालय का उपयोग कर बच्चों के पठन कौशल विकास के लिए फोकस होकर काम किया जा रहा है
10. बच्चों के गणितीय किट आदि का नियमित उपयोग कर गणितीय कौशलों के विकास के लिए फोकस होकर काम किया जा रहा है

उपरोक्त दस बिन्दुओं पर अपने अपने स्कूल में सभी आवश्यक तैयारी कर लेवें | प्रत्यके बिंदु पर तीन तीन विकल्प दिए जाएँगे | उनमें से सबसे सही विकल्प पर आपको समिति एवं पालकों से चर्चा कर उनकी सर्वसम्मति से टिक करना होगा | सामाजिक अंकेक्षण हेतु आपको एक लिंक उपलब्ध करवाया जाएगा जिसमें सामाजिक अंकेक्षण के दिन आपको सर्वसम्मति से प्रत्येक मुद्दे पर चर्चा कर सबसे करीबी बिंदु पर टिक करना होगा |

सामाजिक अंकेक्षण के पूर्व सभी शाला प्रबन्धन समिति की एक बैठक कर लेवें | अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत आपको इन सबका पालकों के साथ उन्मुखीकरण भी करवाना है | आपको उन्हें स्कूल खोलने से पूर्व आवश्यक तैयारी एवं सहयोग के क्षेत्रों पर भी चर्चा एवं सहमति लेनी है |

एजेंडा नौ: करोना हमारी सुरक्षा

महामारी के इस दौर में महामारी को लेकर कई सही व गलत/मिथक जानकारियाँ समुदाय में व्याप्त हैं | इन सब जानकारियों का असर पूरे समुदाय में पड़ता है | हमारे बच्चें भी इससे अछूते नहीं है| सही जानकारी का अभाव इस बीमारी की रोकथाम में असर डालता है | सही जानकारी एवं नियमों का पालन कर हम खुद को, अपने परिवार को एवं समाज को सुरक्षित रख सकते है और इस बीमारी के फैलाव को भी कम कर सकते है| समुदाय तक सही व प्रमाणित जानकारी प्रेषित करने हेतु समग्र शिक्षा द्वारा प्रथम संस्था के सहयोग से 'करोना अपनी सुरक्षा' कार्यक्रम चलाया जा रहा है | यह कार्यक्रम 6 सप्ताह का है और श्रंखलाबद्ध तरीके से आपको इस विषय को लेकर आपको SMS/WhatsApp प्राप्त हो रहे होंगे | आपके माध्यम से समुदाय में यह SMS/WhatsApp कोविड के प्रति जागरूकता फ़ैलाने में अत्यंत सहायक है| सूचना के विषय में यह बात भी बड़ी महत्वपूर्ण होती है कि सूचना किसके माध्यम से प्राप्त होती है| आप लोग ही है जिस पर पूरा समुदाय विश्वास करता है और आपके माध्यम से प्राप्त सूचनाएँ उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है| आपके माध्यम से समुदाय में कितने लोगो व कितने बच्चों तक यह जानकारी प्रेषित हो रही है उसकी जानकारी इस लिंक - https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLScsi_O1q3xNY7BMEmOaUaOYE6aLvgkdQrUCV8BgezbsAdQY5g/viewform के माध्यम से भेज सकते हैं | साथ ही जब आप यह SMS/WhatsApp समुदाय/अभिभावकों के साथ शेयर करें तो उनसे निवेदन कर सकते हैं कि बच्चों के साथ गतिविधि करते समय के फोटो/ वीडियो बनाकर आपके साथ शेयर करें |

आप खुद भी कुछ ऐसे फोटो/वीडियो बना सकते है| आप इन फोटो /वीडियो को इस लिंक https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfUylyeKVL9fw6qdu77_jV-cZzOzl0BjkLb-rR2oWBRjQp4JQ/viewform?vc=0&c=0&w=1&flr=0 के माध्यम से भेज सकते हैं | इनका इस्तेमाल इस पूरे कार्यक्रम के दस्तावेजीकरण में किया जायेगा |

एजेंडा दस: कुछ जरूरी काम

- निपुण भारत का छत्तीसगढ़ में क्रियान्वयन हेतु नया नाम सुझाएँ | इस कार्यक्रम के लिए शाला संकुल स्तर पर अंगना म शिक्षा के नाम से एक प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर जल्दी से जल्दी सभी बच्चों को निपुण भारत के लिए निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु स्थानीय स्तर पर गतिविधियाँ बनाकर उन पर अभ्यास करवाएं |
- स्कूल खुलने पर आपके स्कूल में किए जा रहे विभिन्न कार्यों को मीडिया में साझा करें |
- पन्द्रह अगस्त से सभी कक्षाओं में अध्यापन के दौरान विभिन्न प्रयोगों को करके दिखाने एवं बच्चों को भी प्रयोगों को स्वयं करके सीखने समझने का अवसर देने की शुरुआत करें | इस हेतु भी आप प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन कर जिम्मेदारी देवें |